इस प्रकार इस विधि की सफलता शिक्षक के निम्नलिखित गुणों पर निर्भर है—

(1) - शिक्षक जिस कहानी को अपने छात्रों को सुनाना चाहता है, उसकी पाठ्य-वस्तु पर पूर्ण अधिकार हो।

(2) - कथावाचक निजत्व की भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए, उसको छात्रों में घुल-मिल जाना चाहिए, तभी वह कहानी कहने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

(3) - शिक्षक को कहानी की पाठ्य-वस्तु में रुचि लेनी चाहिए यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह अपने छात्रों की रुचि को विषय के प्रति उत्पन्न करने में असफल रहेगा।

(4) - कहानी कहने का ढंग रुचिकर, स्वाभाविक तथा भावपूर्ण होना चाहिये। अर्थात् उसमें कृत्रिमता नहीं आनी चाहिए।

(5) शिक्षक को अभिनय-कला का भी ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह भावानुसार अपने हाव-भाव प्रदर्शित करने में सफल हो सके। इसके साथ ही उसमें स्वर के भावों के अनुसार उतार-चढ़ाव करने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए यदि उसमें यह शक्ति नहीं होगी तो वह कहानी को सफलतापूर्वक नहीं कर सकेगा और न ही सीखने हेतु उपयुक्त वातावरण ही निर्मित कर सकेगा।

(6) कहानी बालकों के मानसिक स्तर, रुचि एवं अवस्था के अनुकूल होनी चाहिए। यदि छोटी कक्षा के छात्र हैं तो इसके लिए ऐसी कहानियों का चयन किया जाय, जिसके द्वारा उनकी कल्पना एवं कौतूहल प्रवृत्ति को सन्तुष्ट किया जा सके।

(7)- शिक्षक को ऐतिहासिक कहानियाँ, कालक्रम के अनुसार सुनानी चाहिए तथा छात्रों को जो कहानियां सुनाई जाये, वे जीवन-गाथाओं के रूप में हों।

(8)- शिक्षक को कहानी सुनाने में छात्रों की सहायता लेनी चाहिए। उनको सतर्क तथा सक्रिय बनाये रखने तथा सहायक सामग्री का भी उपयोग करते रहना चाहिए। श्यामपट पर कहानी की प्रमुख बातें, स्थलों तथा तिथियों को भी लिखते चलना चाहिए, जिससे छात्र बाद में उनका उपयोग कर सकें।

(9)- कहानी की भाषा छात्रों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए, जिससे वे उसको समझने में समर्थ हो सकें तथा उनका ध्यान उसमें लगा रह सकें।

(10)- शिक्षक को ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।

कथात्मक विधि के गुण :-

(i)- इसके द्वारा बालकों में इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

(ii)- इससे बालकों की कल्पना-शक्ति का विकास होता है। इसके लिए अध्यापक बालकों को पूर्ण रूप-रेखा दे सकता है, और इस रूपरेखा को बालकों से पूर्ण करवा सकता है। बालक इसको पूर्ण करने में अपनी कल्पना-शक्ति का प्रयोग करेंगे।

(iii)- इस विधि से बालक अपने गुप्त भावों को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त करते हैं। जिससे उनकी झिझक तथा लज्जाशील प्रवृत्ति समाप्त हो सकती है।

(iv)- कहानी द्वारा उनकी जिज्ञासा को तृप्त करके उन्हें अनुशासित किया जा सकता है।

9/11/2020